ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वरनगर, दरभंगा

के मानविकी संकाय की हिन्दी विषयक

पी–एच॰डी॰ उपाधि हेतु प्रस्तावित

शोध प्रारूप

प्रस्तावित विषय :

"आरसी प्रसाद सिंह के कविताओं में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना"

शोध-निर्देशक :

डॉ॰ मीनाक्षी राना

सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग, सी॰ एम॰ कॉलेज
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,
दरभंगा

शोधार्थी :

बेबी कुमारी

एम॰ ए॰ हिंदी
मगध विश्वविद्यालय
जे॰ आर॰ एफ॰
पैट क्रमांक

➢ भूमिका :-

मनुष्य में अपने राष्ट्र के प्रति प्रेम जगाने का कार्य हमेशा से ही साहित्यकार करते आये हैं। आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक के समस्त भारतीय साहित्य में राष्ट्रीयता की भावना प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देती है। इसी क्रम में आधुनिक काल के रचनाकार आरसी प्रसाद सिंह के काव्य में राष्ट्रीयता की प्रबल भावना दिखाई देती है । राष्ट्रीय चेतना से व्यापक अर्थ के बोध का द्योतन होता है । जिसमें राष्ट्र की अस्मिता की रक्षा, राष्ट्र का गौरव - गान, राष्ट्र के परिवेश, राष्ट्रीयता का उन्मेष और राष्ट्र के प्रति उस देश के नागरिकों की समग्र सोच और अनुभूति समाहित होती है। राष्ट्रीय चेतना का अर्थ केवल वह नहीं है जिसमें राष्ट्र की गौरवगाथा और वीरता के भाव भरे हों। यह भावना राष्ट्रीयता को संकीर्ण करने का प्रयास करती है।

देश भौगोलिक अवधारणा है, राज्य राजनैतिक अवधारणा है और राष्ट्र सांस्कृतिक अवधारणा है। जो व्यक्ति अपनी संस्कृति से जितना जुड़ा होता है, वह उतना ही राष्ट्रीय होता है। भाषा, साहित्य, पर्व, त्यौहार, रीतिरिवाज, परम्पराएँ, वेशभूषा, खान-पान आदि संस्कृति के ही तत्व हैं। इनका सम्मान एवं संरक्षण राष्ट्रीयता की पहचान है। आरसी प्रसाद सिंह के कविता में राष्ट्रीय चेतना का प्रस्फुटन कई रूपों में हुआ है। उन्होंने एक नवीन दृष्टिकोण लेकर काव्य जगत में प्रवेश किया। अतीत के गौरवगान से लेकर राष्ट्र के प्रति प्रेम की लौ जगाने की भावना से उनकी कविता ओत प्रोत है । उनकी प्रसिद्ध रचना 'वीर कुंवर सिंह', 'आरसी, 'संजीवनी' आदि महाकाव्यों में राष्ट्रीयता का स्वर आवेग के साथ मुखरित हुआ है।

आरसी प्रसाद सिंह की कविता में राष्ट्रीय भावों का एक स्रोत - सा उमड़ता दिखाई देता है । वे भारतीय संस्कृति को पुनर्जीवित करनेवाले सजग रचनाकार थे । अतएव उनकी रचनाओं में साँस्कृतिक - राष्ट्रीयता का स्वर गूंजता है। आरसी प्रसाद सिंह अपनी कविता के माध्यम से जन-

जन तक राष्ट्रीय संदेश पहुँचाने का कार्य किया है। वे एक राष्ट्रीय कवि थे। उनकी कविता में देश की वास्तविक दशा का चित्र बिम्बित- प्रतिबिम्बित होता है।

आरसी प्रसाद सिंह की वैचारिक भाव- भूमि मानवतावादी है। एक सजग साहित्यकार समाज में हो रही उथल-पुथल को अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज के समक्ष प्रस्तुत कर उसे जागृत करने का कार्य करता है।

आरसी प्रसाद सिंह का काव्य जनमानस को आंदोलित कर उनमें नैतिक मूल्यों को स्थापित कर एक नयी ऊर्जा भरता है तथा उन मूल्यों को महत्त्व देने के लिए प्रेरित करता है। जिनमें हिंसा, द्वेष, घृणा को नकार कर स्वस्थ वातावरण का निर्माण किया जा सके।

उनकी कविता संग्रह 'आरसी', 'कलापी' में जीवन-यौवन, प्रेम और सौन्दर्य का सम्मिलित राग तो है ही साथ ही साथ राष्ट्रीयता और देशप्रेम का गान भी है। इस संग्रह में जनता के आक्रोश से फूटते जनविद्रोह का आह्वान भी है। उनके काव्य संग्रह 'जीवन और यौवन' तथा 'नई दिशा' में प्रगतिवाद का स्वर गूँजता है। साथ ही साथ 'द्वंद्व समाप्त' में देश की दशा का चित्रण किया गया है। इन कविताओं का मूल स्वर प्रेरणादायक है। ये कवितायें नवजागरण का भी संदेश देती है.

उनके प्रबंध काव्य 'नंददास' और संजीवनी में पौराणिक एवं ऐतिहासिक विषय-वस्तु को आधार बनाया गया है। इन प्रबंध काव्यों में देश के प्राचीन गौरव को फिर से जीवित करने के साथ- साथ सामाजिक- सांस्कृतिक, राजनैतिक और आधुनिक मूल्यों की वकालत की गई है। संजीवनी में कवि का देश प्रेम अपने चरम सीमा पर है। गुलामी के बेड़ियों में जकडी भारत माँ को देखकर कवि का हृदय विद्रोह कर उठता है। देश के युवा वर्ग को ललकारते हुए देश की आजादी की लड़ाई में अपने प्राणों की बाजी लगा देने का आह्वान कवि करते हैं।

➢ शोध विषय की आवश्यकता :-

साहित्य में समाज एवं उसकी चेतना परिलक्षित होती हैं। साहित्य का एक महत्वपूर्ण कार्य देश को सही दिशा प्रदान करना भी है। साहित्य के माध्यम से लोक चेतना का संचार होता है। इस दृष्टिकोण से आरसी प्रसाद सिंह की राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक कविताएँ और भी प्रासंगिक हो जाती है, जब समाज एवं देश में जाति, धर्म, समुदाय, स्वार्थपरकता, सामाजिक असमानता तथा आर्थिक विषमताओं के कारण अनेक विसंगतियाँ व्याप्त है। इन बाधाओं को दूर करने के लिए सार्थक विचार एवं प्रेरणा देने वाले साहित्य ही सहायक हो सकता हैं। इस दृष्टिकोण से आरसी प्रसाद सिंह का रचना-संसार अति महत्त्वपूर्ण है।

उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से मानव मन एवं मस्तिष्क के तमाम तरह के अनुभवों एवं भावनाओं को स्पर्श करने की कोशिश की है। अपने अध्ययन अनुभवों और चिंतन से उन्होंने जीवन के मूल्यों की गहरी छानबीन की है। इन मूल्यों से साफ जाहिर है कि आरसी प्रसाद सिंह जीवन के प्रति दृढ- आस्था, अटल भक्ति, मर्यादा एवं राष्ट्रीय- चेतना के प्रबल समर्थक रहे हैं। दार्शनिक विचारों की अभिव्यक्ति भी उनके काव्य में दिखाई देती है। उनकी कविताएँ मानव कल्याण की भावना के साथ- साथ 'राष्ट्रीय' तथा 'सांस्कृतिक' चेतना एवं देशप्रेम का संदेश देती है। इनकी रचनाएँ पाठक को ऐसे संसार में ले जाती है, जहाँ देश और देशसेवा सर्वोपरि है। इसी कड़ी में इनका महाकाव्य 'वीर कुँवर सिंह' के कथ्य का अवलोकन आवश्यक प्रतीत होता है। 1857 की क्रांति भारतीय जनमानस को झंकृत कर राष्ट्रीय-बोध के लिए जानी जाती है। इनकी कविताओं में प्रेम, आनंद, उल्लास, वेदना, आशा- निराशा एवं वीरता का समावेश है। आरसी प्रसाद सिंह की कविताएँ अँधेरे के खिलाफ है और अपने अंर्तमन में रोशनी का अपार भंडार समेटे हुए है। इनका कृतित्त्व आज भी प्रासंगिक है। अतः इन पर शोध करना आवश्यक तो है ही समय की माँग भी है।

➢ शोध विषय का महत्त्व:-

आरसी प्रसाद सिंह ने सामाजिक, राजनैतिक, मनोवैज्ञानिक एवं धार्मिक तथा सांस्कृतिक पक्षों को अपनी कविताओं में स्थान दिया है। आारसी प्रसाद सिंह ने अपनी रचनाओं में सामाजिक मूल्यों को आत्मसात अवश्य किया है लेकिन शाश्वत पारंपरिक जीवन - मूल्यों को कभी नहीं छोड़ा।

उनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति का स्वर गूँजता है। कोई भी देश तभी महान बनता है जब वह अपनी संस्कृति को जीवित रखता है। इतिहास के पन्ने पलटने पर ऐसे कई देश हैं जिसकी संस्कृति छिन्न-भिन्न होने पर उस देश का अस्तित्व भी विलीन हो चुका है। प्रस्तावित शोध विषय इस दृष्टिकोण से भी महत्त्वपूर्ण है कि इसके माध्यम से हम भारत की गौरवशाली संस्कृति से परिचित हो सकेंगे।

आरसी प्रसाद सिंह ने अपनी रचनाओं में आम जनता की पीड़ा को स्थान दिया है। उनके साहित्य में समसामयिक घटनाएँ, समाजवाद, साम्यवाद, राजनीति, धर्म, संस्कृति आदि का विवेचन हुआ है। इनकी रचनाएँ 'आरसी', 'कलापी', 'संजीवनी', 'नंददास', 'वीर कुंवर सिंह' आदि संकलन में राष्ट्रीय अस्मिता और गौरव, प्रगतिशील विचार एवं भारतीय संस्कृति का भावबोध परिलक्षित होता है। प्रस्तुत शोध के माध्यम से ऐसे तथ्यों की खोज की जाएगी. जिनसे धार्मिक, राजनैतिक और जातिगत भेदभावों को खत्म करने की प्रेरणा मिल सके तथा जिससे भावनात्मक एकता और सौहार्द का पथ प्रशस्त हो सके। ऐसी स्थिति में देश को एक नयी दिशा देने के लिए भी यह शोध विषय अत्यंत महत्त्वपूर्ण बन जाता है।

➢ पूर्वकृत शोध : -

मेरी जानकारी में 'आरसी प्रसाद सिंह की कविताओं में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना' पर अभी तक कोई अनुसंधान कार्य नहीं हुए हैं। फिर भी इस दिशा में जो शोध कार्य हुये है उसकी सूची निम्न्वत हैं:-

1. परमानंद मिश्र- आरसी प्रसाद सिंह व्यक्तित्व एवं कृतित्व, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय कामेश्वरनगर, दरभंगा। 1983 निर्देशक –डॉ० बमबम सिंह 'नीलकमल' , हिन्दी विभागाध्यक्ष, समस्तीपुर महाविद्यालय समस्तीपुर।

2. माधुरी झा - आरसी प्रसाद सिंह के कहानी साहित्य का अध्ययन , ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय कामेश्वरनगर, दरभंगा। 2002 निर्देशक – डॉ० श्री नारायण सिंह, हिन्दी विभाग , ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय कामेश्वरनगर, दरभंगा।

3. विनय कुमार - आरसी प्रसाद सिंह के कहानी साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय कामेश्वरनगर, दरभंगा। (2014) निर्देशक –डॉ० गगन देव चौधरी हिन्दी बिभाग , केदार संत रमाश्रय महाविद्यालय समस्तीपुर (बिहार)।

4. रीना राय- आरसी प्रसाद सिंह की प्रबन्धेतर कविताओं का अनुशीलन, बाबा भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, बिहार। 2021 निर्देशक –डॉ० कविता कुमारी सिंह, हिन्दी बिभाग, आर. एन. कॉलेज हाजीपुर।

➢ शोध के आधार ग्रंथ :-

कविता :

(1) आजकल

(2) कलापी – तारामंडल प्रकाशन , पटना (1938),

(3) संचयिता- 1942

(4) आरसी- बोस प्रेस मुजफ्फरपुर (1942)

(5) जीवन और यौवन

(6) नई दिशा- वैशाली निकुन्ज, मुजफ्फरपुर।

(7) पांचजन्य- तारामंडल प्रकाशन , पटना। 1954

(8) द्वंद्व समाप्त- 1961

(9) सोने का झरना - 1959

(10) कथा माला- 1966

(11) युद्ध अवश्यंभावी-1991

(12) बदल रही है हवा -1992

(13) मैं किस देश में हूँ -1991

प्रबंध काव्य :-

(1) नन्द दास –तारामंडल प्रकाशन, पटना। 1953

(2) संजीवनी- तारामंडल प्रकाशन, पटना। 1964

(3)भारत सावित्री - तारामंडल प्रकाशन, पटना। 1996

(4) आरण्यक – 1965

(5) वीर कुँवर सिंह -1989

(6) चाणक्य शिखा -1992

गीत : -

(1) प्रेम गीत - 1954

कहानी : -

(1) पंचपल्लव – तारामंडल प्रकाशन, दरभंगा। 1942

(2) खोटा सिक्का - तारामंडल प्रकाशन, मुजफ्फरपुर। 1942

(3) कालरात्रि- वैशाली निकुन्ज, मुजफ्फरपुर। 1944

(4) एक प्याला चाय - तारामंडल प्रकाशन, मुजफ्फरपुर। 1945

5) आंधी के पत्ते- तारामंडल प्रकाशन, पटना। 1945

(6)ठण्डी छाया – दरभंगा प्रेस कंपनी(प्रा०)। 1956

बाल साहित्य:-

(1) चंदामामा

(2) चित्रों में बोरियाँ -

(3) ओनामासी

(4) रामकथा

(5) जादू का वंशी

(6) कागज की नाव

(7) बाल गोपाल

(8) हीरा - मोती

(9) जगमग

(10) कलम और बंदूक

समीक्षा

1. कविवर सुमति : युग और साहित्य

आत्मकथा -

1. पृष्ठभूमि

2. कथ्य तथ्य

➢ अप्रकाशित कृतियाँ :

कविता-

1. कचनार

2. वनमर्मर

3. आग और धुआँ

4. वलाका

5. अमावस्या

6. आकाश कुसुम

7. जो धारा से उठे

8. शिखर चेतना मेरी

9. जल कल्लोल

10. मधुमल्लिका

11. संकलिता

12. आवारा बादल

13. चतुरंग

14. महकती कल्पना मेरी

प्रबंध काव्य :-

(1) पूर्णोदय

(2) असूर्यम्पश्या

(3) सप्त - पर्ण

गीत:-

1. गान मंजरी

2. भाव संगीत

3. पावस गीत

4. दक्षिणा

5. दिलरुबा

6. निवेदिता

7. नवगीतिका

8. मंजुला

9. गीतमालिका

10. गीत मीत

11. सुप्रभातम

12 संझवाती

13. नए गीत

14. अभियान गीत

➢ शोध की परिकल्पना :-

प्रस्तावित शोध विषय **‘आरसी प्रसाद सिंह के कविताओं में राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना’** के सम्बन्ध में मेरी परिकल्पना है कि आरसी प्रसाद सिंह के काव्य का गहन अध्ययन किया जाएगा। आरसी प्रसादसिंह की काव्य रचना उत्कृष्ट है एवं आधुनिक काल के कवियों में उनका विशिष्ट स्थान हैं। उनका साहित्य सामाजिक, राष्ट्रीय- सांस्कृतिक एवं मानवीय मूल्य का समृद्ध भंडार है। प्रस्तावित शोध में उनके काव्य में राष्ट्रीय एवं साँस्कृतिक चेतना को विशेष रूप से उद्‌घाटित करते हुए साहित्य के अनेक अनछुये बिन्दुओं को भी उद्‌घाटित करने का प्रयास किया जाएगा। ऐसी स्थिति में आरसी प्रसाद सिंह का काव्य अनुसंधान के नये द्वार का उद्‌घाटन करता है।

➢ शोध की प्रविधि :-

प्रस्तावित शोध-कार्य में मुख्यतः आगमन तथा निगमन प्रविधि का प्रयोग किया जाएगा। इसके अतिरिक्त ऐतिहासिक, आलोचनात्मक, काव्यशास्त्रीय, तुलनात्मक, समाजशास्त्रीय, मनोवैज्ञानिक, विवरणात्मक, समीक्षात्मक एवं साक्षात्कार आदि विधियों का प्रयोग किया जाएगा।

विभिन्न प्रकाशनों एवं पुस्तकालयों से संपर्क कर आधार एवं संदर्भ सामाग्रियों को अध्ययन के लिए एकत्रित किया जायेगा। साथ ही आरसी प्रसाद सिंह के ग्रामीणों से संपर्क कर उनके सम्बंध में व्याक्तिगत जानकारी प्राप्त की जायेगी। विदित हो कि आरसी प्रसाद सिंह के कुछ ग्रंथ अभी भी अप्रकाशित हैं, उसके सम्बंध में भी जानकारी प्राप्त की जायेगी।

➢ प्रस्तुत शोध प्रारूप का अध्यायीकरण :-

प्रस्तावित शोध प्रारूप निम्न अध्यायों में विभाजित होगा –

भूमिका :-

अध्याय एक - आरसी प्रसाद सिंह का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

अध्याय दो - भारत का राष्ट्रीय आंदोलन और हिन्दी कविता

अध्याय तीन - आरसी प्रसाद सिंह के काव्य में राष्ट्रीय-चेतना

अध्याय चार - आरसी प्रसाद सिंह के काव्य में सांस्कृतिक – चेतना

अध्याय पाँच- आरसी प्रसाद सिंह के काव्य में सामाजिक एवं मानवीय मूल्य

उपसंहार

परिशिष्ट

➢ संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. बालगीत साहित्य : लेखक - निकार देव सेवक, बिनोद चंद पांडे, निदेशक उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ, वर्ष 1983

2. महाकवि आरसी प्रसाद सिंह अभिनंदन ग्रंथ संपादक , उमाशंकर वर्मा

प्रकाशक महाकवि अभिनंदन समिति, एरौत, समस्तीपुर, बिहार, वर्ष 1984

3. आरसी प्रसाद सिंह व्यक्तित्व और कृतित्व, संपादक श्रीन्धन्द्र, सूचना और प्रसारण मंत्रालय (भारत सरकार)

4. प्रगतिवादी भावना में आरसी प्रसाद सिंह का योगदान, जीतेन्द्र कुमार सिंह, रिसर्च पब्लिकेशन -2013

5. कविवर 'आरसी प्रसाद सिंह जीवन और साहित्य- शीलधर प्रसाद

6. महाकवि आरसी प्रसाद सिंह और आचार्य कुमुद विद्यालंकार का काव्य – वैभव, डॉ० सत्येन्द्र प्र० सिंह , अंकुर वुक , 2020

7. समय और संस्कृति, श्यामचरण दुबे, वाणी प्रकाशन, 2016

8. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन , डॉ. के एल खुराना

9. स्वाधीनता आन्दोलन और हिन्दी कविता सम्पादक,डॉ. जे.आत्माराम कस्तुरी विजयम, 2023

10. हिन्दी साहित्य में सांस्कृतिक संवेदना और मूल्यबोध, पं. विद्यानिवास मिश्र स्मृति ग्रंथमाला वाणी प्रकाशन, 2018

11. सांस्कृतिक चेतना के उन्नायक, गिरिश्वर मिश्र, प्रलेक प्रकाशन, 2022

12. संस्कृति और राष्ट्रीय एकीकरण (निबंध) , डॉ. योगेश अटल

13. संस्कृति के चार अध्याय, राम धारी सिंह दिनकर, लोकभारती पेपरबैक्स, 1956

14. संस्कृति क्या है तथा अन्य निबंध , राम धारी सिंह दिनकर , वाणी प्रकाशन. 2024

15. हिन्दी साहित्य का इतिहास , आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, अनुपम प्रकाशन, पटना ।

16. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास , बच्चन सिंह राधाकृष्ण प्रकाशन, सोलहवां संस्करण – 2022

17. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र डॉ. हरदयाल

18. राष्ट्रीय चेतना को चुनौती , कुलदीप अग्निहोत्री , प्रभात प्रकाशन

19. भारतीय कविता में राष्ट्रीय चेतना , जगदीश चतुर्वेदी, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, दिल्ली- 1987

शोध निर्देशक :

डॉ. मीनाक्षी राना
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग, सी०एम कॉलेज,
ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर, दरभंगा

शोधार्थी :

बेबी कुमारी
एम० ए० हिन्दी
मगध विश्वविद्यालय
नेट , जे. आर. एफ.

****

शोध सारांश

हिन्दी साहित्य में आरंभ काल से ही राष्ट्रीय भावना से समृद्ध साहित्य लिखा गया है। इसी कड़ी में आधुनिक काल के रचनाकार आरसी प्रसाद सिंह के काव्य में राष्ट्रीयता की प्रबल भावना दिखाई देती है। अतीत के गौरवगान से लेकर राष्ट्र के प्रति प्रेम की लौ जगाने की भावना से उनकी कविता ओत-प्रोत है। उनकी कविताओं में देश की वास्तविक दशा का चित्रण है। साहित्य का एक कर्तव्य देश को सही दिशा प्रदान करना भी है।

आरसी प्रसाद सिंह की कविताएँ हमें नवजागर का संदेश देती है। ऐसे में आरसी प्रसाद सिंह का रचना संसार हमें प्रेरणा देती है एवं राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का बोध कराती है।

शोध निर्देशक :

Meenakshi Rana

सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
सी० एम० कॉलेज, दरभंगा
ल० ना० मि० वि० वि०, दरभंगा

डॉ. मीनाक्षी राणा
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग, सी०एम कॉलेज,
ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर, दरभंगा

शोधार्थी :

बेबी कुमारी

बेबी कुमारी
एम० ए० हिन्दी
मगध विश्वविद्यालय
नेट , जे. आर. एफ.

सहमति-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **श्रीमती बेबी कुमारी**, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा को प्रस्तावित शोध-प्रारूप **"आरसी प्रसाद सिंह के कविताओं में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना"** विषय पर शोध-निर्देशन देना मुझे स्वीकार है। मेरी जानकारी में इस विषय पर शोध-कार्य संपन्न नहीं हुआ है।

मैं इनके उज्जवल भविष्य की मंगलकामना करती हूं।

भवदीय

डॉ० मीनाक्षी शर्मा

सहायक प्राध्यापक

हिंदी विभाग, सी० एम० कॉलेज,

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,

दरभंगा